हा मैं हूं राजा विक्रम औ अपने शहर में जाता हूं तू
ौन जो मुझे रोकता है तब देव बोला कि मुझे दे-
ताओं ने इस नगर की रखवाली को भेजा है जो तुम
च राजा विक्रम हो तो पहिले मुझसे लड़ो पीछे श-
र में जाओ इस बात के सुन्तेही राजा ने चरना का छ
र उस देव को ललकारा फिर वह देव भी उनके स -
मुख हुआ लड़ाई हो ने लगी निदान राजा ने देव
ो पछाड़ उसकी छाती पर चढ़ बैठा । तब उसने
हा ऐ राजा तूने मुझे पछाड़ा लेकिन मैं तुझे जी
दान देता हूं तवतो राजा ने हंस कर कहा तू दीवा-
ना हुआ है किसको जी दान देता है मैं चाहूं तो
तुझे मार डालूं तू मुझे जीदान क्या देगा तब वह
राक्षस बोला कि ऐ राजा मैं तुझे कालसे बचाता हूं प-
हले मेरी एक बात सुन फिर बे परवाह तमाम दुनि-
यां का राज कर । आखिर राजाने उसे छोड़ दिया
और उसकी बात दिल देके सुन्ने लगा फिर वह
वह उसे कहा कि इस शहर में चन्द्रभान न्हों ने लगा
राता था इत्तिफाकन् एक वहां देके रोज़
... तो देखता क्या है मिन्दः हूं ...

वृच्छ में उलटा लटका हुआ है और धुवां पी पी कर
रहता है न किसी से कुछ लेता है न बात करता है।
उस का यह हाल देख राजा ने अपने घर आ सभा में
बैठ कर यह कहा जो कोई उस तपस्वी को लावे वह
लाख रुपैया पावे इस बात को सुन कर एकबेश्या ने
राजा के पास आ यह अर्ज की अगर महाराज की
आज्ञा पाऊं तो उसी तपस्वी से एक लड़का जन्माय
उसी के कांधे पर चढ़ा कर लेआउं इस बात के सुन्ने
से राजा को अचंभा हुआ और उस वेश्या को तपस्वी
के लाने के वास्ते बीड़ा देकर रुखसत किया। यह उस
वन में गई और योगी के मकान पर पहुंची देखती क्या
है कि वह योगी सच मुच उलटा लटक रहा है न कुछ
खाता न पीता है और सूख रहा है गरज उस वेश्याने
हलवा [illegible] उस तपस्वी के मूंह में दिया उसे मीठा [illegible]
जो [illegible] वह उसे चाट गया फिर उस वेश्या ने और
[illegible]। इसी तरह से दो रोज़ तक हलव[illegible]
[illegible] खाने से एक कूवत उसे हुई तब
[illegible] से नीचे उतर उससे पूछा तू
[illegible] वेश्या ने कहा मैं देवकन्या[illegible]

लोक में तपेस्या करती थी अब इस वन में आई हूं फिर उस तपस्वी ने कहा तुम्हारी मढ़ी कहां है हमें दिखाओ तब वह वेश्या उस तपस्वी को अपनी मढ़ी में ला कर षट रस भोजन करवाने लगी तो तपस्वी ने धुवां पीना छोड़ दिया और हररोज़ खाना खाने पानी पीने लगा निदान कामदेव ने उसे सताया फिर तपस्वी ने उस से भोग किया योग खोया और वेश्या को गर्भ रहा वक्त् मोअैयन में लड़का पैदा हुआ । जब कई एक महीने का हुआ तब उस रंडी ने तपस्वी से कहा कि गोसाईं जी अबचलकर तीर्थ यात्रा कीजिये जिस्से शरीर के सब पाप कटें ऐसी बातें कर उसे भुलाय लड़का उस्के कांधे पर चढ़ाय राजा की मजलिस को चली कि जहां से यह उस बातका बीड़ा उठा कर आई थी। जिसवक्त् राजा के साह्मने पहुंची राजा उसको दूर से पहचान और लड़के को उस तपस्वी के कांधे पर देख यह मजलिस से कहने लगा देखो तो यह वही वेश्या है जो योगी के लेने को गई थी उन्हों ने कहा की कि महाराज सच फरमाते हो यह वही है और उन मुलाहिज़ा फरमाईये कि जो २ बात हमिन्दः हूं कुछ